शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अज्ञेय के काव्य में बिम्ब सौन्दर्य

डॉ. वर्षा शर्मा (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

अज्ञेय ने जीव तथा जगत् से तरह-तरह की अनुभूति ग्रहण की और उसे पाठक के समक्ष रखा। उनकी रचना संस्कृति-संसृति के ओर-छोर नापती है, उनकी रचना स्रोतस्विनी अनेक रेत के कगारों को तोड़ती बही है, हिमालय से सागर, सागर से मरूस्थल, स्वदेश-विदेश, प्रेम गीत से घृणा गान, संयोग से बिछोह, आकाशीय पिण्डों से पृथ्वी, बसन्त से पतझड़, व्यक्ति दीप से समाज पंक्ति, प्रकृति की रूनझुनए नारी प्रेम, सौन्दर्य, देश प्रेम, शोषित के प्रति सहानुभूति यथार्थ चित्रण आदि अनेकानेक क्षितिजों को उनके 'हारिल मन' ने एक अकेली तृण कलम के सहारे नापा है। बिम्ब संयोजन की दृष्टि से उनका काव्य अप्रतिम है। प्रस्तुत शोध पत्र में अज्ञेय के बिम्ब विधान पर नवीन दृष्टि से विचार किया गया है।

भूमिका

सौन्दर्य काव्य एवं कलाओं का आधारभूत एवं अपरिहार्य तत्व है। अनंत काल से समस्त कलाएँ सौन्दर्य की ही साधना एवं संसाधन करती आई हैं, किन्तु यह शब्द परम तत्व की तरह आज भी अव्याख्येय एवं रहस्यमय बना हुआ है। अनेक मर्मज्ञों द्वारा इसे परिभाषित किया गया है। फिर भी इसमें कुछ तो ऐसा जरूर है जो परिभाषा की सीमाओं में बँध नहीं पाता। सौन्दर्य प्रकृति के कोने-कोने में व्याप्त है। सौन्दर्य मानव मन के भी अत्यन्त निकट है।

"वस्तुतः सौन्दर्य क्या है यह न बता पाकर भी सुंदर क्या है जानते हैं , पहचानते हैं और सुंदर क्या है यह बता सकने का अर्थ यह है कि हम कुछ ऐसे गुणों को पृथक कर सकते हैं जिनके कारण सुन्दर-सुन्दर होता है , जिनकी उपस्थिति की पड़ताल करके हम कहते हैं कि सुन्दर-सुंदर है।"1

सौन्दर्य शब्द की व्युत्पत्ति अनेक प्रकार से की जाती है-

"सु+उन्द+अरन = सुन्दर-अच्छी तरह आर्द्र करने वाला अर्थात सुख देने वाला।"2

सु नन्दयति अर्थात जो अच्छी प्रकार प्रसन्न करें। अंग्रेजी में सौन्दर्य का पारिभाषिक प्रति शब्द ब्यूटी है जिसकी व्युत्पत्ति है -बो+टी, बो का अर्थ है प्रिय अथवा रसिक और टी भाववाचक प्रत्यय है। ब्यूटी का शब्दार्थ हुआ रसिकता या श्रृंगारी पुरुष का गुण। आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार ब्यूटी मानवीय मुख , रूप या इतर वस्तुओ में आकृति, अनुपात, रंग आदि गुणों का ऐसा संयोग है जो नेत्रों को आनंद प्रदान करता है।

सुन्दर वस्तुओं के सामान्य धर्म को ही सौन्दर्य कहते हैं। सौन्दर्य का लक्ष्यार्थ हैः मन को आकर्षित करने की सामर्थ्य और जिस वस्तु में यह सामर्थ्य हो वही सुन्दर है। यद्यपि सौन्दर्य की असंख्य परिभाषाएँ भारतीय एवं पाश्चात्य

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जगत में मिलती हैं। तथापि सौन्दर्य की सर्वसम्मत परिभाषा दें पाना संभव नहीं है। अज्ञेय मानते हैं कि "शर्म आँखों की होती है , तो उघड़ापन भी आँखों में होता है। "3 उनके अनुसार प्रेम तथा सौन्दर्य की अवस्थिति ग्रामीण तथा नागरिक की अलग-अलग रूप में होती है। उसी प्रकार उसके सौन्दर्य बोध की संभावनाएँ भी अलग-अलग होती हैं, क्योंकि सौन्दर्य का आनंद के साथ घनिष्ट संबंध होता है।4

"अज्ञेय का सौन्दर्य बोध उच्च स्तर का है। उन्होंने हिन्दी काव्य मे सौन्दर्य बोध के नए -नए आयाम खोले उसमें विशदता तथा गंभीरता आई। अज्ञेय का सौन्दर्य बोध जिस स्तर का है वह किसी तरह के हल्केपन को बर्दाश्त नहीं कर सकता। वह इतना विराट है कि उसकी पूर्ण परिणति अध्यात्म में ही संभव है।"5

"अज्ञेय ने सौन्दर्यबोध के साथ-साथ उसकी सुबोध होने को भी आवश्यक माना है। सुबोध भी सौन्दर्य का ही एक अंग है या होना चाहिए। ऐसा जरूर हो सकता है कि वस्तु के अनुकूल रूप विधान में इस अनुकूलता में ही सौन्दर्य है। सुबोधता इसलिए कम हो कि वह वस्तु भी वैसी ही हो।"6

अज्ञेय के सौन्दर्यबोध के विषय में रामदेव शुक्ल ने लिखा है परिपक्व दृष्टि संपन्न कलापारखी का सौन्दर्यबोध हिन्दी कविता को अज्ञेय के पास आकर ही मिला। छायावाद की अप्सरा को यथार्थ की धरती पर उतारकर उसका पार्थिव श्रृंगार करने और उसे पारखी दृष्टि से नैवेद्य का दान करने का काम अज्ञेय ने ही किया।

अज्ञेय का सौन्दर्य बोध

अज्ञेय का सौन्दर्य बोध इस कथन से भी स्पष्ट होता है कि "पैकिंग से लेकर कमरे की सजावट तक और कलमनवीसी से लेकर शिकार तक हाथ इन के ऐसे मंजे हुए हैं कि जरा भी अव्यवस्था इन्हें सहन नही है और कभी- कभी अत्यन्त निकट के लोगों के लिए भी इस व्यवस्था का उद्रेक झुनझलाहट की सामग्री बन जाता है। उनकी मन चाही डिजाइन ऐसी विकट होती है और साथ ही ऐसी सरल भी क्योकि नक्शा उनके मन में बहुत साफ रहता है कि बस बनने वालों बीसियों बार उधेड़ते बुनते परे शान हो जातें हैं। "7 वस्तुतः अज्ञेय हर स्तर पर एक सीमा निर्धारित मानते थे। उन्होंने अपने कार्य तथा व्यक्तिगत जीवन के संबंध में जितना लिखा है उससे तो यही स्पष्ट होता है कि "एक अनुशासित व्यक्ति के रूप में उन्होंने कार्य किया। सदानीरा काव्य संग्रह के प्रकाषन पर जिसमें कि प्रत्येक कविता तिथि के साथ छपी है के संबंध में अज्ञेय का कथन है-साधारणतः मैं व्यवस्थित ढ़ंग से रखता हूँ।"8 सौन्दर्य चेतना के संबंध में भी उनकी ये सीमायें पूर्णतः लागू होती हैं। सौन्दर्य के नाम पर हल्की और छिछली बात करना उन्हें स्वीकार नहीं। यद्यपि कहीं-कहीं उनकी कविताओं में अकुँठ सौन्दर्य बोध है जिस पर आलोचक नाक-भौं सिकोड़ते रहे है किन्तु उनका सौन्दर्य चित्रण कुण्ठारहित होने के साथ-साथ भव्य और विराट भी है और उनके काव्य में सौन्दर्य बोध को खण्डित करने वाली कोई चूक कोई अननु शासित आतुरता उनके काव्य में नहीं मिलती।9

अज्ञेय के सौन्दर्य बोध पर रामदेव शुक्ल के विचार उद्धृत करना उचित प्रतीत होता है , उनके अनुसार - "प्रयोजनविद्ध सौन्दर्यबोध वालों को अज्ञेय का परिपक्व प्रौढ और रागदीप्त काव्य अनाधुनिक और असंपृक्त लगता है तो इसके लिए वे उनके साथ नीचे उतर कर समझौता करने को तैयार नहीं है।"10 अज्ञेय का यह कथन कि देखने का चश्मा जैसा हो वह वस्तु वैसी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रतीत कहना वास्तव में उचित है क्योंकि मनोवैज्ञानिक भी मानसिक तैयारी को आवश्यक मानते हैं।

अज्ञेय के काव्य में बिम्ब

बिम्ब शब्द का प्रयोग साहित्य और मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से होता है। किसी वस्तु विशेष का प्रत्यक्ष कल्पनात्मक चित्र ही बिम्ब है , कविता में भावनाकूल शब्दों का प्रयोग परम आवश्यक होता है पर उससे भी महत्वपूर्ण तत्व बिम्ब है। बिम्ब एक ऐन्द्रिय चित्र है जो कुछ अंशों तक अलंकृत होता है , जिसके सन्दर्भ में संवेदनाएँ निहित रहती हैं तथा जो पाठक के मन में विशिष्ट रसात्मक भाव उद्दीप्त करता है। तात्पर्य यह है कि भाषा और भाव के पश्चात् काव्य में जिस स शक्त वस्तु की अपेक्षा होती है वह ठोस वस्तु बिम्ब है। बिम्ब से कविता में भाषा का संयम अभिव्यक्ति की स शक्तता आती है। काव्य में बिम्ब का महत्व असंदिग्ध है। हिन्दी के नये कवियों में अज्ञेय की कविता बिम्ब सौन्दर्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अज्ञेय की कविता में जो बिम्ब सहज रुप में मिलते है उन्हें निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है - (1) दृश्य बिम्ब (2) मानस बिम्ब (3) अलंकृत बिम्ब (4) यौन बिम्ब

दृश्य बिम्ब वे बिम्ब हैं जिनको कवि ने साधाराण भाषा में बिना किसी कलात्मकता के काव्य में उतारा है। अज्ञेय के काव्य में दृश्य बिम्ब अनेक स्थलों पर आये हैं। उदाहरण के लिए कवि की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिये -

"उड गयी चिडिया
काँपी, फिर
धिर / हो गयी पत्ती।"11

मानस बिम्बों को भाव बिम्ब की अभिधा भी दी जाती है। मानस बिम्बों की प्रमुख विशेषता इनकी भावनात्मकता है। अज्ञेय के काव्य में इस प्रकार के अनेक बिम्ब हैं जो मानस बिम्ब की श्रेणी में आते हैं। उदाहरणार्थ इन पंक्तियों को लिया जा सकता है -

"पश्वगिरी का नभ्र चीडों में
डगर चढ़ती उमंगों - सी
बिछी पैरों में नदी ज्यों दर्द की रेखा।
विहग - शिशु मौन - नीड़ो में,
मैंने आँखभर देखा।"12

इस प्रकार के बिम्ब अज्ञेय काव्य में कम ही मिलते हैं, क्योंकि अज्ञेय भाववादी न होकर यथार्थवादी हैं।

अलंकृत-बिम्ब वे बिम्ब हैं जो बडी सजधज के साथ कविता में खडे दिखाई देते हैं। वैसे तो प्रत्येक बिम्ब में कुछ न कुछ अलंकृति होती ही है पर इस प्रकार के बिम्बों में अलंकरण को ही प्रामुख्य मिल जाता है। उपमा , रूपक और मानवीकरण आदि अलंकारों के प्रयोग से कविता में जो बिम्ब प्रस्तुत किये जाते हैं उन्हें इसी वर्ग के अन्तर्गत रखा जाता है। इन बिम्बों का आधार कलात्मक सौन्दर्य होता है। अज्ञेय ने अनेक कविताओं में इस प्रकार के बिम्ब प्रस्तुत किये हैं। उदाहरणार्थ पूनो की साँझ कविता में ऐसा ही अलंकृत बिम्ब है। कवि कहता है-

"पति-सेवा रत साँझ
उचकता देख पराया चाँद
लजाकर ओट हो गयी।"13

यौन बिम्ब अलंकृत बिम्ब का ही एक पृथक रूप है। किन्तु अज्ञेय के काव्य में यौन बिम्ब की स्वतंत्र सत्ता है। अज्ञेय अपने यौन-बिम्बों के लिए आलोचना क्षेत्र में काफी चर्चित व्यक्तियों में से है। अज्ञेय के यौन बिम्ब यौन प्रतीकार्थ रखते हुए भी बड़े सफल उतरे हैं। निम्नलिखित पंक्तियों में कवि की बिम्ब योजना दृष्टव्य है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"घिर गया नभ, उमड़ आये मेघ काले
भूमि के कम्पित उरोजों पर झुका सा
विशद श्वासाहत, चिरातुर
छा गया इन्द्र का नील वृक्ष
वज्र -सा यदि तड़ित सा झुलता हुआ सा।"14

इन बिम्बों के अतिरिक्त अज्ञेय ने कहीं-कहीं और भी बड़े श्रेष्ठ बिम्ब प्रस्तुत किये हैं। प्रत्येक पंक्ति में जहाँ अलग-अलग बिम्ब बनते जाते हैं उससे बिम्ब की जो माला बनती है वह भी अज्ञेय की कविता में दृष्टव्य है। अरी ओ करूणा प्रभामय की 'एक चित्र' कविता इसी प्रकार की कविता है।

अज्ञेय बिम्ब प्रयोग में नवीनता के समर्थक रहे हैं। वस्तुतः बिम्ब की जो निर्मात्री कल्पना शक्ति है उसके अभाव में कोई भी कवि सफल और श्रेष्ठ बिम्बों का विधायक नहीं हो सकता है। अज्ञेय ने अपनी कविताओं में सुन्दर बिम्ब दिये है वे स्पष्ट अनुभूतिगम्य और सजीव व सही और असली रूप प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष

यही कहा जा सकता है कि अज्ञेय एक ऐसे आसन पर विराजमान हैं जहाँ पर बैठ कर उन्होंने शिल्प के क्षेत्र में नये बिम्ब और प्रतीक हिन्दी कविता को दिये हैं। उत्कृष्ट शिल्प-विधान के निमित्त जिस विशेष मनः स्थिति और उत्कृष्ट तन्मयता की आव श्यकता है, वह अज्ञेय में सहज प्राप्त है। वस्तुतः बिम्ब मनुष्य की कल्पनाशक्ति की उपज होते हैं। जब कवि मानस में अंकित किसी चित्र को स्पष्ट करना चाहत है तो वह बिम्ब का सहारा लेता है। 'बिम्ब' के सम्बन्ध में डॉ. धीरेन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य को श' में कहा गया है , "मनुष्य जीवन में बिम्ब विधान अथवा कल्पना विधान का बडा महत्व है। प्रस्तुत परिवे श के संवेदनों और प्रत्यक्ष के अतिरिक्त उसके मानस में अतीत की तथा कभी अस्तित्व न रखने, न घटने वाली वस्तुओं और घटनाओं की असंख्य प्रतिमाएं भी रहती हैं। बिम्ब इसी मानस प्रतिभा का पर्याय है।" अज्ञेय जी ने भी अपनी कल्पना को बिम्ब रूप में बड़े ही सुन्दर ढंग से काव्य में उकेरा है। अज्ञेय जी अपने मन के भाव को अपने अंत:चक्षु में प्रत्यक्ष कर उसे लिखते हैं। अज्ञेय जी की कविताएं पढ़ने पर कविता में छिपे भाव चित्र रूप में आँखों के आगे प्रकट हो जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य: अज्ञेय, पृष्ठ 10
2. नयी कविता का सौन्दर्यशास्त्र: मंजू गुप्ता, पृष्ठ 29
3. समीक्षा के वातायन: रामे श्वरलाल खण्डेलवाल, पृष्ठ 231
4. तीसरा सप्तक: केदारनाथ सिंह, पृष्ठ. 115
5. अज्ञेय सम्पादक: विद्यानिवास मिश्र पृष्ठ 5-6
6. आत्मपरक : अज्ञेय, पृष्ठ 61
7. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि अज्ञेय : सम्पादक विद्यानिवास मिश्र, पृष्ठ 5-6
8. सदानीरा प्रथम भाग: अज्ञेय, पृष्ठ 7
9. सदानीरा प्रथम भाग : अज्ञेय, पृष्ठ 176
10. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि अज्ञेय: सम्पादक विद्यानिवास मिश्र, पृष्ठ 282-283
11. अरी ओ करूणा प्रभामय: अज्ञेय, पृष्ठ 76
12. इन्द्रधनु रौदे हुए ये: अज्ञेय, पृष्ठ 29
13. अरी ओ करूणा प्रभामय : अज्ञेय, पृष्ठ 67
14. इत्यलम् : अज्ञेय, पृष्ठ 154